

त्रैलोक्यमोहनकवचम्

रुद्रयामले

धधध७

॥ श्री

॥ श्री

त्रै० ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीपरदेवतायै नमः ॥ देव्युवाच ॥ महानिपुरसुंदर्यायायाविद्यास्त्वयो
 १ दिताः ॥ कृपया कथिताः सर्वाश्रुताश्चाधिगतामया ॥ १ ॥ प्राणनाथाधुना ब्रूहि कवचं मंत्रविग्रहं ॥ त्रैलोक्यमोहनं चेति कवचं मंत्रविग्रहं ॥ २ ॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामि सर्वार्थकवचं स्फुटं ॥
 ॥ इश्वर उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सुंदरिमाणवल्लभे ॥ ३ ॥ त्रैलोक्यमोहनं नाम स
 विष्णुर्वविद्यो घविग्रहं ॥ यं धत्वा दानवान् नैजघान मुहुर्मुहुः ॥ ४ ॥ सृष्टिं वितनुते ब्रह्मा यत्
 हं त्वाफठनाद्यतः ॥ संहर्तार्यं यतो देवी देवेशो वासवो यतः ॥ ५ ॥ धनाधिपः कुबेरोऽपि यतः स
 वेदिगीश्वराः ॥ न देयं परशिष्येभ्यो देयं शिष्येभ्य एव च ॥ ६ ॥ अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्त्वा
 मृत्युमवाप्नुयात् ॥ श्रीमनिपुरसुंदर्याः कवचं वस्य ऋषिः शिवः ॥ ७ ॥ छंदो विराट् देवता च श्रीम
 निपुरसुंदरी ॥ धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ८ ॥ शिरो मेवाग्भवं पातुक ए ईल ही

हेरंब
 १

रूपकं॥हसकलहीललाटंतुपातुकामेश्वरादिमं॥९॥हकहलहीदशौचपातुकामेशमध्य
 मं॥१०॥कहयलहीश्रुतीतुपातुकामंततीयकं॥हकलसहीशक्त्याख्यंपातुजिह्वांचपंचमं॥
 ॥११॥कएईलहीहसकलहीहकहलहीकहयलहीहकलसहीपरमात्मरूपिणी॥वदनं
 सकलंपातुपंचकूटैस्तुपंचमी॥१२॥कएईलहीघ्राणंतुपातुवाभवसंज्ञिकं॥हसकहल
 हीकंटंतुपातुकामेशसंज्ञकं॥१३॥सकलहीशक्तिकूटंस्कंधोपातुसदामम॥कएईलही
 हसकहलहीसकलहीच॥१४॥कामेनोपासिताविद्याकक्षदेशंसदावतु॥क्लींहीश्री
 ऐंसौःॐहीश्रीऐंक्लींसौ॥श्रीहीक्लींऐंही॥१५॥कामादिषोडशीपातुभुजौत्रिपुरसुंदरी॥

क्रीं

त्रै० क० ओं क्लीं हीं श्रीं ऐं क्लीं सोः श्रीं हीं क्लीं स्त्रीं ऐं क्रों श्रीं हूं ॥ १६ ॥ तारादिषोडशी पातु मणिबंधद्व
यंतथा ॥ श्रीं हीं क्लीं ऐं सोः ॐ हीं श्रीं ऐं क्लीं सोः ॥ सोः ऐं क्लीं हीं श्रीं ॥ १७ ॥ रमादिषोडशी पातु क
रोत्रिपुरसुंदरी ॥ मायादिकातुहस्तातु श्रीमत्रिपुरसुंदरी ॥ १८ ॥ हीं ह्रों ओं ऐं हीं श्रीं ऐं क्लीं
सोः ॥ स्त्रीं क्रों ऐं हीं हूं हूं श्रीं ॥ मायादिषोडशी ख्याता हृदयं परिरक्षु ॥ १९ ॥ ऐं हीं श्रीं क्लीं
सोः ऐं क्लीं सोः ऐं क्लीं सोः ऐं हीं श्रीं क्लीं सोः ॥ वागादिषोडशी पातु स्तनो मे सुंदरी परा ॥ २० ॥
कए श्रीं हसकल हीं क्लीं हसकहल हीं सोः ॥ सक हीं नखवर्णायाश्चो पातु पराजिता ॥ २१ ॥
हीं ह्रों ह्रों हीं ह्रों ह्रों क्लीं हसकहल हीं हीं हीं सोः सोः हहसकहल हीं क्लीं ह्रों ह्रों हीं

तु ४

हेरं
२

स्त्रीं स्त्रीं हीं मे ॥ २२ ॥ एकत्रिंशद्वर्णरूपामहापुरुषपूजिता ॥ महागुहास्वरूपाचकेवला
 नंदचिन्मयी ॥ २३ ॥ कटिदेशं सदापातु परब्रह्मस्वरूपिणी ॥ हसकल हीं पातु मे पृष्ठं ह
 सकहल हीं ॥ २४ ॥ कुक्षिं पातु कामराज सकल हीं सदावतु । वक्षस्छलं शक्तिकूटं सर्व
 संपत्तिदायकं ॥ २५ ॥ हसकल हीं हसकहल हीं सकल हीं मे । लोपामुद्रा पंचदशी मध्ये देशं
 ॥ २६ ॥ सदावतु । कहएईल हीं नाभिं पातु हकएईल हीं । कटिं पातु सकिथनी च सकएईल हीं सदा ॥ २७ ॥
 कहएईल हीं हकएईल हीं सकएई ॥ लही वसुचंद्राणि मां मानवी सर्वतो वतु ॥ २८ ॥ सहकए
 ईल हीं तद्रूपं गमं सदावतु ॥ सहकहएईल हीं गुह्यं पातु सदा मम ॥ २९ ॥ हसकएईल हीं तुजा
 नुनी पातु मे सदा ॥ सहकएईल हीं सहकहएईल हीं ह ॥ ३० ॥ सकएईल हीं चंद्रविद्यापक्षाक्षि

३. क. वर्णिका ॥ जल जै भय संधाते सदा मां परिरक्षतु ॥ ३१ ॥ हस कह ईल हीं सा गुक्क युग्म सदा
 ३ वतु ॥ हस कह ईल हीं पादौ पातु चमे सदा ॥ ३२ ॥ सह कह ईल हीं मे प्रपदे पातु सर्वदा ॥ हस
 कह ईल हीं हस कह ईल हीं स ॥ ३३ ॥ ह कह ईल हीं सदा कुबेरेण प्र पूजिता ॥ द्वाविंशत्य
 क्षरा विद्या सर्वांगं मे सदा वतु ॥ ३४ ॥ कह ईल हीं प्राच्यां तु त्रिपुरा परिरक्षतु ॥ हस कह ल
 ३ हीं पातु वहि कोणे निरंतरं ॥ ३५ ॥ सह सकल हीं याभ्यां पातु मां सर्व सिद्धि दं ॥ कह ईल
 हीं हस कह ल हीं सह सकलं ॥ ३६ ॥ हीं तु विद्या गस्ति सेव्या चक्र स्था मां सदा वतु ॥ सह ई
 ल हीं नित्यं च नैर्ऋत्यां मां सदा वतु ॥ ३७ ॥ सह कह ल हीं पातु प्रतीच्यां तु द्वितीयकं ॥ सकल हीं
 तु वायव्ये सदा मां परिरक्षतु ॥ ३८ ॥ सह ईल हीं सुह कह ल हीं सकल हीं तु ॥ नंदारा धित विद्ये

हेरं ३

यंसर्वांगैमे सदावतु ॥ ३९ ॥ हस कह ही मुत्तरे पातु मांग दीश्वरी । सह कह ही मीशान्यां शिवपत्नी
 च पातु मां ॥ ४० ॥ सक कहल ही सुंदरी उर्ध्वे मां पातु सर्वदा । हस कल ही सह कल ही सक कहल ही
 मां ॥ ४१ ॥ अधोरक्षतु सानित्यं सूर्य पूज्या मयोदया ॥ कए ईल ही हस कहल ही सकल ही मे
 ॥ ४२ ॥ सर्वांगं सक्त सं पूज्या सततं परिरक्षतु ॥ कए ईल ही ह कहल ही हस कल ही च ॥ ४३ ॥
 ब्रह्माणी मां सदा पाया ह्री मन्त्रि पुर सुंदरी ॥ हस कल ही हस कहल ही सकल ही ह ॥ ४४ ॥ सक
 ल हस कहल सकल ही च शं करी ॥ चतुष्कृत्य महा विद्या पाताले मां सदावतु ॥ ४५ ॥ हस क
 ल ही माधारं हस कहल ही शिवं ॥ सकल ही पातु नामिं सह कल ही मनाहतं ॥ ४६ ॥ सह कह
 ल ही कंठं सह सकल ही तथा ॥ मनो भुवं सदा पातु रस संख्यं महा प्रभं ॥ ४७ ॥ हस कल ही हस
 कहल ही सकल ही स ॥ हकल ही सह कहल ही सह सकल ही ॥ ४८ ॥ षड्कृत्य वैष्णवी सावे

त्रै० क० पातु मां सुंदरी परा ॥ कएई लहरीं हस कहल हरीं सकल ॥ ४९ ॥ हरीं दुर्वास सा पूज्या दिक्षु विद्या
 ४ सदा वतु ॥ कहएई लहरीं हलएई लहीं सकएई ॥ ५० ॥ लहीं क्रोधेन सं पूज्या मां विदिक्षु चरक्ष
 तु ॥ हसकल हीं हस कहल हीं सकल हीं ॥ ५१ ॥ महाज्ञान मयी पातु नित्यं मां षोडशी परा
 क ॥ श्रीं हीं क्लीं ऐं सोः ॐ हीं श्रीं कएई लहरीं हसौ ॥ ५२ ॥ हलहीं सकल हीं सोः ऐं क्लीं हीं श्रीं सदा
 ५ वतु ॥ सर्वांग मे महाविद्या बीजरूपा च षोडशी ॥ ५३ ॥ ओं क्लीं हीं श्रीं ऐं क्लीं सोः कएई लहरीं हसक
 हल हीं सकल हीं स्त्री ऐं क्रों क्रीं ईं हंतथा पुनः ॥ ५४ ॥ श्री महा षोडशी पूर्णा प्रथिता भुवन त्रये
 ॥ ज्ञानेन मृत्युरा मनी मां शिरस्छा सदा वतु ॥ ५५ ॥ श्री महा षोडशी पूर्णा या देव्या च प्र पूजि
 ता ॥ यस्या विज्ञान मात्रेण मृत्योर्मृत्युर्भवेत्स्वयं ॥ ५६ ॥ ऐं कएई लहरीं क्लीं हसक हल हीं सोः स

हेरंब
 ४

क॥ लहीं सोहं हों हं सः हीं सकल हीं सौः ह सक ॥ ५७ ॥ हल हीं क्लीं क ए ई ल ह्रीं ऐं ब्रह्म स्वरूपिणी ॥
 नेत्र वेद युतैर्वर्णैर्युता मां सर्वतो वतु ॥ ५८ ॥ ब्रह्म स्वरूपिणी च येन परमानंद विद्म्यना ॥ अष्टादशा
 क्षरी विद्या सदामां परिरक्षुतु ॥ ५९ ॥ इति ते कथितं देवि ब्रह्म विद्या कलेवरं ॥ त्रैलोक्य मोहनं ना
 म कवचं ब्रह्म रूपकं ॥ ६० ॥ सप्तलक्ष महाविद्यास्तस्मादौ कथिता प्रिये ॥ तासां सारात् सारत
 राया या विद्याः सुपोषिता ॥ ६१ ॥ बहुना त्रकिमुक्तेन श्रीमहा षोडशी परा ॥ प्रकाशिता महादेवी
 यां पृच्छ सि पुनः पुनः ॥ ६२ ॥ महाविद्या मयं ब्रह्म कवचं मनुखोदितं ॥ गुरुमभ्यर्च विधिवत्पुर
 श्वर्यं समाचरेत् ॥ ६३ ॥ अष्टोत्तरशतं जप्त्वा दशांशं हवनादिकं ॥ ततस्तु सिद्धि कवचः पुण्यात्मा
 मदनोपमः ॥ ६४ ॥ मंत्रसिद्धिर्भवेत्तस्य पुरश्चर्यं विना ततः ॥ गद्यपद्य मयी वाणी तस्य वक्त्रात्प्रजायते ॥

त्रै० व० ॥ ६५ ॥ वक्त्रे तस्य वसेद्वाणी कमलानि श्वला गृहे । पुष्पांजल्यष्टकं दत्वा मूले नैव पठेत् सकृत् ॥ ६६ ॥
 अपि वर्षसहस्राणां पूजाफलमवाप्नुयात् ॥ आत्मानं तन्मयं कृत्वा यः पठेत् कवचं परं ॥ ६७ ॥ यं यं
 पश्यति वैशीघ्रं स सदा सो भवेद्भुवं ॥ भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थं धारयेद्यदि ॥ ६८ ॥ कंठे वा दक्षि
 णे वा हो स कुर्याद्वासवज्जगत् ॥ त्रिलोकीं क्षोभयेत्येव त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ ६९ ॥ तद्वा त्रं प्राप्य
 शस्त्राणि ब्रह्मास्त्रादीनि पार्वति ॥ माल्यानि कुसुमानि वसुस्वदानि भवन्ति हि ॥ ७० ॥ स्पृध्वां निधू
 य भवने लक्ष्मीर्वाणीर्वै सेततः ॥ इदं कवचमज्ञात्वा योजयेत् सुन्दरीं परां ॥ ७१ ॥ नवलक्षं प्रजप्त्वा
 पितस्य विद्यानसिध्यति ॥ शास्त्रघातमवाप्नोति सो चिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥ ७२ ॥ इदमेव परं य
 स्मात् भुक्तिमुक्तिप्रदायकं ॥ तस्मात् सर्वप्रयत्नेन पठनीयं मुमुक्षुभिः ॥ ७३ ॥ भूवेरमगत्रिदत्तषो

हेरंब
 ४

त्रै० क० उशनागराक्षदि॥ युग्मवस्वनलाकोणविंदुमध्ये॥ ^पसिंहासनोपरिगतारकपीठमध्ये प्रोत्फु
ल्लपद्मनयनां त्रिपुरांभजेहं॥ ७४॥ इति श्रीरुद्रमले त्रैलोक्यमोहनकवचं संपूर्णं॥ ॥ श्री॥

॥ श्रीपरदेवतार्पणमस्तु॥

त्रैलोक्यमोहवन्धवन्ध

८०